पाठ - 33

डॉ0 श्यामा प्रसाद मुखर्जी

राष्ट्र की एकता और अखंडता की बलिवेदी पर अपना सर्वस्व न्योछावर करने वाले महान नेताओं में डॉ0 श्यामा प्रसाद मुखर्जी का नाम प्रमुखता से लिया जाता है। भारतीय जनसंघ के संस्थापक, महान शिक्षाविद ओजस्वी वक्ता, श्रेष्ठ विचारक एवं प्रखर राष्ट्रवादी राजनीतिज्ञ डॉ0 श्यामा प्रसाद मुखर्जी का जन्म 6 जुलाई, सन् 1901 को कोलकाता (बंगाल) में हुआ था। इनके पिता का नाम आशुतोष मुखर्जी एवं माता का नाम श्रीमती योगमाया देवी था। इन्होंने 1917 में मैट्रिक, 1921 में बी0ए0 तथा 1923 में लॉ की उपाधि अर्जित की। वे उच्च शिक्षा के लिए इंग्लैण्ड गए और सन् 1927 में बैरिस्टर बनकर स्वदेश लौटे। इनके पिता एक प्रतिष्ठित विद्वान थे। उन्हीं का अनुसरण करते हुए डॉ0 मुखर्जी ने विद्याध्ययन के क्षेत्र में उल्लेखनीय सफलताएँ अर्जित की थीं।

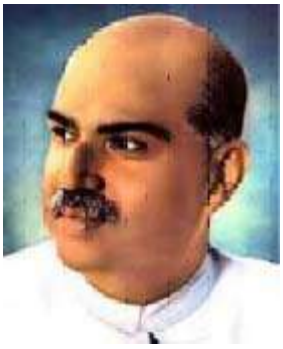

डॉ0 मुखर्जी 33 वर्ष की आयु में कोलकाता विश्वविद्यालय के कुलपति बने। इस पद पर रहते हुए इन्होंने पहला काम यह किया कि विश्वविद्यालय के शिक्षा क्रम में बांग्ला भाषा को माध्यम बनाया और बांग्ला, हिंदी एवं उर्दू में आॅनर्स की परीक्षाएँ निर्धारित कीं। 1936

में उन्होंने आग्रहपूर्वक श्री रवीन्द्रनाथ टैगोर से बांग्ला में दीक्षांत भाषण करवाया जो कि पूर्णतया नवीन और उचित था। राष्ट्र प्रेम से प्रेरित होकर राष्ट्र की सेवा हेतु उन्होंने राजनीति में प्रवेश किया। डॉ0 मुखर्जी प्रगतिशील विचारों के पोषक थे। इसके लिए उन्होंने कृषक प्रजापार्टीसे मिलकर प्रगतिशील गठबंधन का निर्माण किया। इसी समय वे वीर सावरकर के प्रखर राष्ट्रवाद के प्रति आकर्षित होकर हिंदू महासभा में सम्मिलित हो गए।

मुस्लिम लीग की नीतियों के कारण बंगाल में सांप्रदायिक विभाजन की स्थिति उत्पन्न हो रही थी। ब्रिटिश सरकार इस सांप्रदायिकता को बढ़ावा देने में लगी थी। अब देश का विभाजन अवश्यंभावी प्रतीत होने लगा, तब डॉ0 मुखर्जी ने इसका विरोध करते हुए ब्रिटिश सरकार को इस नीति का पालन करने पर विवश कर दिया कि ‘‘विभाजन का आधार जनसंख्या है।‘‘ परिणामतः पूर्वी बंगाल, पूर्वी पाकिस्तान और पश्चिमी बंगाल भारत का हो गया।

डॉ0 मुखर्जी एक संवेदनशील व्यक्ति थे। वर्ष 1943 में बंगाल दुर्भिक्ष की चपेट में आ गया जिसका प्रमुख कारण ब्रिटिश सरकार की कुत्सित नीतियाँ थीं। इस दुर्भिक्ष के समय राहत कार्यों में डॉ0 मुखर्जी का संगठन कौशल जीवंत हो उठा, जिससे लाखों लोगों के प्राणों की रक्षा हो सकी।

महात्मा गांधी और सरदार पटेल के आग्रह पर वे भारत के पहले मंत्रिमंडल में शामिल हुए और उद्योग मंत्रालय का पदभार ग्रहण किया। वे मंत्री तो बन गए किंतु राष्ट्रवादी चिंतन के चलते उनका मतभेद अन्य नेताओं से बना ही रहा। राष्ट्रीय हितों की प्रतिबद्धता उनकी सर्वोच्च प्राथमिकता थी। अतः उन्होंने मंत्रिमंडल से त्याग पत्र दे दिया। इसके बाद डा0 मुखर्जी ने संसद में प्रतिपक्ष की भूमिका निभाने का निश्चय किया। इसके लिए उन्होंने एक राजनैतिक मंच की आवश्यकता का अनुभव करते हुए अक्टूबर, 1951 में भारतीय जनसंघ का गठन किया, जिसके संस्थापक अध्यक्ष का गौरव इन्हें प्राप्त हुआ।

डॉ0 मुखर्जी को अपने जीवन में सबसे बड़ी चुनौती का सामना जनसंघ की स्थापना के दो वर्ष बाद करना पड़ा। जम्मू कश्मीर में उस समय की अलगाववादी प्रवृत्ति के कारण राष्ट्रीय मानस विक्षुब्ध हो उठा। इस समय डॉ0 मुखर्जी ने प्रजा परिषद के सत्याग्रह का पूर्ण समर्थन किया जिसका उद्देश्य जम्मू-कश्मीर को भारत का पूर्ण और अभिन्न अंग बनाना था। इस समय तक जम्मू-कश्मीर का अलग झंडा था, अलग संविधान था और वहाँ का मुख्यमंत्री प्रधानमंत्री कहलाता था जिसका डॉ0 मुखर्जी ने प्रबल विरोध किया।

संसद में 26 जून, 1952 को अपने ऐतिहासिक भाषण में डॉ0 मुखर्जी ने धारा-370 को समाप्त करने की जोरदार वकालत की थी। अपने संकल्प को पूरा करने के लिए उन्होंने नई दिल्ली में भारतीय सरकार और श्रीनगर में जम्मू-कश्मीर की सरकार को चुनौती देने का निश्चय किया और मई 1953 में 'परमिट' व्यवस्था को नकारते हुए जम्मू-कश्मीर राज्य में प्रविष्ट हुए। इसके कारण उन्हें गिरफ्तार कर नजरबंद कर दिया गया। इसी जेल में इस महान राष्ट्रचिंतक का 23 जून, 1953 को देहावसान हो गया।

डॉ0 श्यामा प्रसाद मुखर्जी के इस बलिदान का समाचार पूरे देश में जंगल की आग की तरह फैल गया जिसकी चतुर्दिक तीखी प्रतिक्रिया हुई। परिणामस्वरूप जम्मू-कश्मीर की तत्कालीन सरकार को अपदस्थ किया गया और अलग संविधान, अलग प्रधान एवं अलग झंडे का प्रावधान निरस्त हो गया।

उनके निधन पर कविवर हरीन्द्र नाथ चट्टोपाध्याय ने इन शब्दों में श्रद्धांजलि अर्पित की-

''विराट पुरुष प्रस्थान कर गया।

महान प्रतिभा का सूर्यास्त हो गया।''

डॉ0 श्यामा प्रसाद मुखर्जी का व्यक्तित्व एवं कृतित्व अनंतकाल तक भारतीय जनमानस को प्रेरणा प्रदान करता रहेगा।

अभ्यास

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए-

1-डॉ0 श्यामा प्रसाद मुखर्जी का जन्म कब और कहाँ हुआ ?

2-उप कुलपति रहते हुए डॉ0 मुखर्जी ने शिक्षाक्रम में क्या बदलाव किया ?

3-मंत्रिमण्डल से त्यागपत्र देने के बाद डॉ0 मुखर्जी ने क्या किया ?

4-डॉ0 श्यामा प्रसाद मुखर्जी द्वारा समर्थित प्रजा परिषद के सत्याग्रह का क्या उद्देश्य था ?

5-डॉ0 श्यामा प्रसाद मुखर्जी के बलिदान के परिणामस्वरूप जम्मू-कश्मीर राज्य के संबंध में क्या बदलाव

आए ?